॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला
७५

॥ श्रीः ॥

कौटिलीयम्
अर्थशास्त्रम्

हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः--
वाचस्पति गैरोला
अध्यक्ष : पाण्डुलिपि-विभाग, हिन्दी संग्रहालय,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

चौखम्बा विद्याभवन
वाराणसी २२१००१

विषय-सूची

(१) विनयाधिकारिक : पहला अधिकरण

विषय	पृष्ठ
प्रकरण और अधिकरण का निरूपण	१
१ : विद्या-विषयक विचार : आन्वीक्षकी	८
२ : विद्या-विषयक विचार : त्रयी	१०
३ : विद्या-विषयक विचार : वार्ता और दण्डनीति	१२
४ : वृद्धजनों की संगति	१४
५ : काम-क्रोधादि छह शत्रुओं का परित्याग	१६
६ : साधु स्वभाव राजा की जीवनचर्या	१८
७ : अमात्यों की नियुक्ति	२०
८ : मन्त्री और पुरोहित की नियुक्ति	२३
९ : गुप्त उपायों से अमात्यों के आचरणों की परीक्षा	२५
१० : गुप्तचरों की नियुक्ति (स्थायी गुप्तचर)	२९
११ : गुप्तचरों की नियुक्ति (भ्रमणशील गुप्तचर)	३२
१२ : अपने देश में कृत्य-अकृत्य पक्ष की सुरक्षा	३७
१३ : शत्रु-देश के कृत्य-अकृत्य पक्ष को मिलाना	४०
१४ : मन्त्राधिकार	४३
१५ : सन्देश देकर राजदूतों को शत्रुदेश में भेजना	४९
१६ : राजपुत्रों से राजा की रक्षा	५३
१७ : नजरबन्द राजकुमार और राजा का पारस्परिक व्यवहार	५८
१८ : राजा के कार्य-व्यापार	६१
१९ : राज-भवन का निर्माण और राजा के कर्तव्य	६५
२० : आत्मरक्षा का प्रबन्ध	६९

(२) अध्यक्षप्रचार : दूसरा अधिकरण

१ : जनपदों की स्थापना	७७
२ : ऊसर भूमि को उपयोगी बनाने का विधान	८२
३ : दुर्गों का निर्माण	८५
४ : दुर्ग से सम्बन्धित राजभवनों तथा नगर के प्रमुख स्थानों का निर्माण	९१
५ : कोष-गृह का निर्माण और कोषाध्यक्ष के कर्तव्य	९५

विषय | पृष्ठ

६ : समाहर्ता का कर-संग्रह कार्य ९९
७ : अक्षपटल में गाणनिक के कार्यों का निरूपण १०३
८ : अध्यक्षों द्वारा गबन किये गये धन की पुनः प्राप्ति १०९
९ : राजकीय उच्चाधिकारियों के चालचलन की परीक्षा ११४
१० : शासनाधिकार ११६
११ : कोष में रखने योग्य रत्नों की परीक्षा १२५
१२ : खान एवं खनिज पदार्थों की पहिचान और उनके विक्रय की व्यवस्था १३६
१३ : अक्षशाला में सुवर्णाध्यक्ष के कार्य १४३
१४ : राजकीय स्वर्णकारों के कर्तव्य १५०
१५ : कोष्ठागार का अध्यक्ष १५७
१६ : पण्य का अध्यक्ष १६४
१७ : कुप्य का अध्यक्ष १६७
१८ : आयुधागार का अध्यक्ष १७०
१९ : तौल और माप का अध्यक्ष १७४
२० : देश और काल का मान १८०
२१ : शुल्क का अध्यक्ष १८५
२२ : कर-वसूली के नियम १८९
२३ : सूत-व्यवसाय का अध्यक्ष १९२
२४ : कृषि-विभाग का अध्यक्ष १९५
२५ : आबकारी विभाग का अध्यक्ष २००
२६ : वध-स्थान का अध्यक्ष २०५
२७ : वेश्यालयों का अध्यक्ष २०७
२८ : नौकाध्यक्ष २१२
२९ : पशुविभाग का अध्यक्ष २१६
३० : अश्वविभाग का अध्यक्ष २२२
३१ : गजशाला का अध्यक्ष २२६
३२ : हाथियों की श्रेणियाँ तथा उनके कार्य २३२
३३ : रथसेना तथा पैदल-सेना के अध्यक्षों और सेनापति के कार्यों का निरूपण २३६
३४ : मुद्राविभाग और चारागाह विभाग के अध्यक्ष २३९
३५ : समाहर्त्ता और गुप्तचरों के कार्यों का निरूपण २४१
३६ : नागरिक के कार्य २४५

(३) धर्मस्थीय : तीसरा अधिकरण

विषय	पृष्ठ
१ : शर्तनामों का लेखन-प्रकार और तत्सम्बन्धी विवादों का निर्णय	२५५
२ : विवाह-सम्बन्ध : (१) धर्म-विवाह : स्त्री का धन : स्त्री को पुनर्विवाह का अधिकार : पुरुष को पुनर्विवाह का अधिकार	२६१
३ : विवाह-सम्बन्ध : (२) स्त्री की परिवरिश : कठोर स्त्री के साथ व्यवहार : पति-पत्नी का द्वेष : पति-पत्नी का अतिचार : अतिचार पर प्रतिषेध	२६६
४ : विवाह-सम्बन्ध : (३) परिणीता का निष्पतन : पर पुरुष का अनुसरण : पुनर्विवाह की स्थिति	२७०
५ : दाय-विभाग : उत्तराधिकार का सामान्य नियम	२७५
६ : दाय-विभाग : पैतृक क्रम से विशेषाधिकार	२७९
७ : दाय-विभाग : पुत्रक्रम से उत्तराधिकार	२८२
८ : वास्तुक : गृह-निर्माण	२८६
९ : वास्तुक : मकान बेचना : सीमा-विवाद : खेतों की सीमाएँ : मिश्रित विवाद : कर की छूट	२८९
१० : वास्तुक : रास्तों का रोकना : गावों का बन्दोबस्त : चारागाहों का प्रबन्ध : सामूहिक कार्यों में शामिल न होने का मुआवजा	२९४
११ : ऋण लेना	२९९
१२ : धरोहरसम्बन्धी नियम	३०५
१३ : दास और श्रमिक सम्बन्धी नियम	३११
१४ : मजदूरी के नियम और साझीदारी का हिस्सा	३१६
१५ : क्रय-विक्रय का बयाना	३२०
१६ : दान किये हुये धन को न देना; अस्वामि-विक्रय, स्व-स्वामि-सम्बन्ध	३२३
१७ : साहस	३२८
१८ : वाक्पारुष्य	३३१
१९ : दण्डपारुष्य	३३४
२० : द्यूत-समाह्वय और प्रकीर्णक	३३९

(४) कण्टक-शोधन : चौथा अधिकरण

१ : शिल्पियों से प्रजा की रक्षा	३४५
२ : व्यापारियों से प्रजा की रक्षा	३५२
३ : दैवी आपत्तियों से प्रजा की रक्षा के उपाय	३५६

विषय पृष्ठ

४ : गुप्त षड्यन्त्रकारियों से प्रजा की रक्षा के उपाय ३६१
५ : सिद्धवेषधारी गुप्तचरों द्वारा दुष्टों का दमन ३६४
६ : शंकित पुरुषों की पहिचान, चोरी के माल की पहिचान और चोर की पहिचान ३६७
७ : आशुमृतक की परीक्षा ३७२
८ : जाँच और यातना के द्वारा चोरी को अंगीकार करना ३७६
९ : सरकारी विभागों और छोटे-बड़े कर्मचारियों की निगरानी ३८०
१० : एकांग वध अथवा उसकी जगह द्रव्य-दण्ड ३८६
११ : शुद्धदण्ड और चित्रदण्ड ३८९
१२ : कुंवारी कन्या से संभोग करने का दण्ड ३९३
१३ : अतिचार का दण्ड ३९८

(५) योग-वृत्त : पाँचवाँ अधिकरण

१ : राजद्रोही उच्चाधिकारियों के सम्बन्ध में दण्ड-व्यवस्था ४०५
२ : कोष का अधिकाधिक संग्रह ४१२
३ : भृत्यों का भरण-पोषण ४२०
४ : राजकर्मचारियों का राजा के प्रति व्यवहार ४२५
५ : व्यवस्था का यथोचित पालन ४२८
६ : विपत्तिकाल में राज-पुत्र का अभिषेक और एकछत्र राज्य की प्रतिष्ठा ४३२

(६) मण्डल-योनि : छठा अधिकरण

१ : प्रकृतियों के गुण ४४१
२ : शान्ति और उद्योग ४४५

(७) षाड्गुण्य : सातवाँ अधिकरण

१ : छह गुणों का उद्देश्य और क्षय, स्थान तथा वृद्धि का निश्चय ४५३
२ : बलवान् का आश्रय ४५८
३ : सम, हीन तथा बलवान् राजाओं के चरित्र और हीन राजा के साथ संबन्ध ४६१
४ : विग्रह करके आसन और यान का अवलंबन ४६६
५ : यान संबन्धी विचार, प्रकृतिमण्डल के क्षय, लोभ तथा विराग के हेतु और सहयोगी समवायिकों का हिस्सा ४७०
६ : सामूहिक प्रयाण और देश, काल तथा कार्य के अनुसार संधियाँ ४७७

विषय	पृष्ठ
७ : द्वैधीभाव सम्बन्धी सन्धि और विक्रम	४८४
८ : यातव्य सम्बन्धी व्यवहार और अनुग्रह करने वाले मित्रों के प्रति कर्तव्य	४८९
९ : मित्र-सन्धि और हिरण्य-सन्धि (सन्धिविचार १)	४९३
१० : भूमि-सन्धि (सन्धि-विचार २)	५००
११ : अनवसित सन्धि (सन्धि-विचार ३)	५०५
१२ : कर्म-सन्धि (सन्धि-विचार ४)	५११
१३ : पार्ष्णिग्राह-चिन्ता	५१६
१४ : दुर्बल विजिगीषु के लिये शक्तिसंचय के साधन	५२२
१५ : बलवान् शत्रु और विजित शत्रु के साथ व्यवहार	५२७
१६ : अधीनस्थ राजाओं के प्रति विजेता विजिगीषु का व्यवहार	५३२
१७ : सन्धि-कर्म और सन्धि-मोक्ष	५३७
१८ : मध्यम, उदासीन और मण्डलचरित	५४४

(८) व्यसनाधिकारिक : आठवाँ अधिकरण

१ : प्रकृतियों के व्यसन और उनका प्रतीकार	५५५
२ : राजा और राज्य के व्यसनों पर विचार	५६२
३ : सामान्य पुरुषों के व्यसन	५६६
४ : पीडनवर्ग, स्तम्भवर्ग और कोषसङ्गवर्ग	५७३
५ : सेना-व्यसन और मित्र-व्यसन	५८१

(९) अभियास्यत्कर्म : नौवाँ अधिकरण

१ : शक्ति, देश, काल, बल-अबल का ज्ञान और आक्रमण का समय	५८९
२ : सैन्य-संग्रह का समय, सैन्य-संगठन और शत्रुसेना से मुकाबला	५९५
३ : पश्चात्कोपचिन्ता और बाह्याभ्यन्तर प्रकृति के कोप का प्रतीकार	६०२
४ : क्षय, व्यय और लाभ का विचार	६०६
५ : बाह्य और आभ्यन्तर आपत्तियाँ	६१३
६ : राजद्रोही और शत्रुजन्य आपत्तियाँ	६१७
७ : अर्थ, अनर्थ तथा संशय सम्बन्धी आपत्तियाँ और उनके प्रतीकार के उपायों से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ	६२५

(१०) साङ्ग्रामिक : दसवाँ अधिकरण

१ : छावनी का निर्माण	६३७
२ : छावनी-प्रयाण और आपत्ति एवं आक्रमण के समय सेना की रक्षा	६४०
३ : कूट-युद्ध के भेद : अपनी सेना का प्रोत्साहन और अपनी तथा पराई सेना का प्रयोग	६४४

विषय | पृष्ठ

४ : युद्धयोग्य भूमि और पदाति, अश्व, रथ तथा हाथी आदि सेनाओं के कार्य ६५१
५ : पक्ष, कक्ष तथा उरस्य आदि विशेष व्यूहों का सेना के परिणाम के अनुसार व्यूह विभाग, सार तथा फल्गु बलों का विभाग और चतुरङ्ग सेना का युद्ध ६५५
६ : प्रकृतिव्यूह, विकृतिव्यूह और प्रतिव्यूह की रचना ६६२

(११) वृत्तसंघ : ग्यारहवाँ अधिकरण

१ : भेदक प्रयोग और उपांशुदण्ड ६६९

(१२) आबलीयस : बारहवाँ अधिकरण

१ : दूतकर्म ६७९
२ : मन्त्र-युद्ध ६८३
३ : सेनापतियों का वध और राजमण्डल की सहायता ६८८
४ : शस्त्र, अग्नि तथा रसों का गूढ़ प्रयोग और वीवध, आसार तथा प्रसार का नाश ६९२
५ : कपट उपायों या दण्ड-प्रयोगों द्वारा और आक्रमण के द्वारा विजयोपलब्धि ६९६

(१३) दुर्गलम्भोपाय : तेरहवाँ अधिकरण

१ : उपजाप ७०५
२ : कपट उपायों द्वारा राजा को लुभाना ७०६
३ : गुप्तचरों का शत्रु-देश में निवास ७१५
४ : शत्रु के दुर्ग को घेरकर अपने अधिकार में करना ७२२
५ : विजित देश में शान्ति की स्थापना ७३१

(१४) औपनिषदिक : चौदहवाँ अधिकरण

१ : शत्रु-वध के प्रयोग ७३७
२ : प्रलम्भन योग में अद्भुत उत्पादन ७४४
३ : प्रलम्भन योग में औषधि तथा मन्त्र का प्रयोग ७५१
४ : शत्रु द्वारा किये गये घातक प्रयोगों का प्रतीकार ७६०

(१५) तन्त्रयुक्ति : पन्द्रहवाँ अधिकरण

१ : अर्थशास्त्र की युक्तियाँ ७६५

चाणक्य-सूत्र ७७५

पारिभाषिक शब्दकोश ८०१

शब्द-सूची ८१७

—:o:—